RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-08
August-2018
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

वैदिक–शिक्षाओं का नवाचार (सन्दर्भ :– शतपथ संदर्शन)

डॉ. सुरेश कुमार ढाका

असिस्टेण्ट प्रोफेसर–विभागाध्यक्ष–(शिक्षा–विभाग) श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुन्झुनूं (राज.)

यदि यह कह दिया जाय कि वेदों मे भारतीय संस्कृति के प्राण वसते हैं तथा आर्यत्त्व की सच्ची पहचान कराने वाले ग्रन्थ वेद ही हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विश्व के पुस्तकालयों में यदि ऐसे ग्रन्थ की खोज की जाय कि जिसका उद्देश्य विना किसी साम्प्रदायिक भेद–भाव के सर्वसमाज को उन्नति के मार्ग में अग्रसर करने की भावना से भावित हो तब उनमे वेद ही एक मात्र ऐसा ग्रन्थ है जो सम्प्रदायों से ऊपर उठकर जीव मात्र के कल्याण की बात करता हुआ उपलब्ध होता है।

अतः उपरोक्त के अनुसार यह निश्चित हो जाता है कि मानव के सर्वविध अभ्युदय के लिए वेदों का अध्ययन करना और कराना आधुनिक समाज में भी उतना ही प्रासांगिक और आवश्यक है जितना कि वह पूर्व काल में आर्यावर्त की धरती पर कभी था।

आज वेदाध्ययन के विषय में जनमानस के मध्य एक ऐसी भ्रान्ति फैला दी गई है कि वेदों का अध्ययन करना अत्यन्त कठिन हैं तथा सामान्य जन के लिए उनका अध्ययन करना ही असम्भव है। यही कारण है कि जनमानस के मध्य फैली हुई इस अवधारणा से भारतीय समाज और संस्कृति का पोषक तथा सर्व कल्याणकारक वेद आज जनसामान्य की शिक्षा से अत्यन्त दूर हो गया।

आज हम जब कभी वेदों की बात करते हैं तो हमारे सम्मुख एक पवित्र ग्रन्थ की छवि सामने आकर खड़ी हो जाती है जिसका अध्ययन करने की बजाय उसकी पूजा तक ही हम सीमित रह जाते हैं। उसको सिर झुकाकर नमन करते हैं और यह मान लेते हैं की हम वेदों का आदर करने वाले तथा उसके उपासक हैं। जबकि सत्य यह है कि वेदों की सच्ची उपासना सिर से नमन करना नहीं वल्कि उसका अधिकाधिक अध्ययन करना और उसके उपदेशों और आदेशों का वैज्ञानिक कसौटी पर कसकर उसे स्वीकार करना है।

वेदों का कलेवर मुख्यतः चार स्तम्भों में विभक्त है, जिनमें संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् हैं। संहिता भाग में मन्त्र हैं, ब्राह्मण भाग में मन्त्रों के व्याख्यान हैं, आरण्यकों में ब्राह्मणग्रन्थों के भीतर जो गुत्थियाँ सामान्य जन की समझ से परे हैं उनका विशेष व्याख्यान हैं एवं उपनिषद् तो वेद में निहित मन्त्रों व मन्त्रांशों के विशिष्ट वैज्ञानिक विवेचन हैं।

शतपथ संदर्शन के प्रारम्भ में प्रकाशक जी.एच. पब्लिकेशन, इलाहाबद के द्वारा जो यह कहा गया है कि ''जनसामान्य के द्वारा वेदों को पुनः सरलता से समझा जा सके; उसके व्याख्यानों से उत्पन्न गुत्थियों की गहरी खाई के पार जाया जा सके, इसके लिए यह ''शतपथ संदर्शन'' नामक ग्रन्थ सेतु के सदृश है। जिसे तपःपूत डॉ.सूर्यनारायण गौतम ने कठिन परिश्रम द्वारा जन सामान्य के प्रबोधन हेतु तैयार किया है।'' उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि, प्रकाशक ने जो अपनी टिप्पणी उक्त ग्रन्थ के विषय में की है वह अक्षरशः सत्य है।

शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में कर्मकाण्ड के साथ उस क्रिया की महत्ता को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप आख्यानों का लेखन किया गया है, जिनकी सख्या सताधिक है। किन्तु उक्त ग्रन्थ में सभी आख्यानों का संग्रहण न करते हुए केवल उन्हीं प्रमुख आख्यानों का संकलन किया गया है जो आधुनिक काल में विशेष शिक्षाप्रद हैं एवं जो अन्यत्र भी संस्कृत साहित्य मे रूपान्तरित होकर विद्यमान हैं। वैदिक संहिताओं की अबूझ पहेलियों को समझने के लिए तथा तथ्य एवं भाव की स्पष्टता के कारण यह ग्रन्थ सभी प्रकार के पाठकों के लिए परमोपयोगी है।

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति महाकवि डा. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी के शब्दों में –

''डॉ0 गौतम वेदपण्डित हैं, उनमे सामाजिक जीवन के साथ वैदिक दृष्टि एवं वैदिक चिन्तन को आत्मसात् करने की ललक है, इन्होंने कई ग्रन्थ इसी प्रकार रच दिया है। इनकी मननवृत्ति और रचनाधर्मिता उत्साहवर्धन योग्य ही है और सराहनीय भी है। मैं श्री गौतम को शुभकामना और बधाई देते हुए संतुष्ट हूँ कि, ये रचनाओं के लिए समर्पित है। अन्यान्य कार्यों को छोड़कर विद्याराधन कर रहे है यही सुखद् है। मुझे विश्वास है कि– ''विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मां शेवधिष्टे हमस्मि'' का वाक्य इन्होंने पढ़ा है, समझा है और अपनाया है। इनका लक्ष्य वेदभगवान् सर्वथा सुलभ कराएँगे ऐसा विश्वास है।''[1]

प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक उच्चशिक्षा विभाग रीवा, संभाग रीवा, डा. विनोद कुमार श्रीवास्तव ने वैदिक चिन्तन मंजूषा के सन्दर्भ में अपनी सम्मति प्रदान करते हुए कहा है–

''ये (डा.सूर्यनारायण गौतम) वैदिक ज्ञान के मर्मज्ञ हैं, इनका वैदिक चिन्तन अति उन्नत है, व्यवहार में सादगी और चिन्तन में क्रान्ति है। ये ऋषि परम्परा के सवाहक हैं। इन्होंने वेद जैसे दुरुह विषय में अथक परिश्रम कर उसे सामान्य जन के लिए सरल तथा सुबोध बनाने का साहसिक कार्य किया है।''[2]

संस्कृत जगत् के मूर्द्धन्य शिक्षाविद् एवं आशुकवि प्रो. उमाकान्त मिश्र के शब्दों में–

''संसार का मार्ग कुछ और है और निर्वाण/संस्कृत साधना का मार्ग कुछ और है आज के युवा में ऐसे व्यक्तित्व का मिलना बड़ा कठिन है। आर्थिक संकटों से जूझते हुए पारिवारिक दायित्व का भार उठाते हुए डा. सूर्य नारायण जी अपने मार्ग से विचलित न होने वाले पथिक हैं। वे निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं अपने

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

लक्ष्य की ओर उस अनन्त की ओर। अनेक सम्मानों से सम्मनित विविध ग्रन्थों के सर्जक शैक्षिक गतिविधियों एवं सामाजिक सेवाओं में निरन्तर लगे हुए डा. गौतम भूयशः बधाई के पात्र हैं।''

डा. गौतम की प्रशंसा में आपने लिखा है—

यावद्धि चन्द्रो वियदंङ्कशायी, विभाति नित्यं प्रभयानुषक्तः।
तावन्नुदं वागमृतैः पिपर्तु, नारायणोऽसौ खलु सूर्यपूर्वः।।[3]

इसी प्रकार संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं प्रोफेसर—शास. संस्कृत महाविद्यालय, भितरी, सीधी म.प्र. डा. नन्दनन्दन पाण्डेय जी ने डा. गौतम द्वारा लिखित वेदचिन्तनम् नामक ग्रन्थ की शुभाशंसा में कहा है—

''शब्दावल्यां माधुर्यं कस्यचिदपि कवेः वैशिष्ट्यं मन्यते विद्वद्भिः यदत्र तत्प्राचुर्येन दृश्यते। किमत्र बहुना ? कवेरस्य वेदविषयकेन चिन्तनेन साहित्यजगत् समृद्धं भविष्यति। रचनेयं वेदानुगामिनां शोधार्थिनां कृतेऽपि महदुपयोगीति। वेदमर्मज्ञस्य स्तुत्यप्रयासरतस्य पण्डितप्रवरस्य डॉ0 सूर्यनारायण गौतमस्य रचनेयं सूर्यज्योतिरिव परमज्योतसः प्रकाशवितरणं करिष्यतीति वयं आशास्महे। किं बहुना—

वेदस्यज्ञानं विषयस्यज्ञानं, विद्यावतां प्रेमविधेश्चज्ञानम्।
नारायणं सूर्यमिवेतिमन्ये, चक्षुष्मतां दृष्टिरिवातनोतु।।''[4]

1.असुरघ्नीवाणी 2.आप्त्य कथा 3.देवासुर संग्राम 4. विदेघ माथव 5.होता अग्नि 6.यज्ञ से स्वर्ग 7.त्वष्टा का यज्ञ 8.इन्द्र का छिपना 9.यज्ञ प्रजापति 10.मनु की मीन 11.पुनराधेय 12. सोमकी चोरी 13.देवों का झगड़ा 14.कद्रू—सुपर्णी 15.रुद्र की उत्पत्ति 16.शातपर्णेय का प्रश्न 17.चार बड़ी बातें 18.अश्वपति के उपदेश 19.स्वर्ण प्राप्ति 20.श्री की लूट 21.पुरुरवा उर्वशी 22. उद्दालक का उपदेश 23.देवों की स्वर्गयात्रा 24.पुरुष के टुकड़े 25. विदेह के प्रश्न 26.ब्रह्म बल 27.केशि की गाय 28.त्वष्टा का यज्ञ 29.सृष्टि कथा 30.ब्रह्म के अनेक रूप 31.मैत्रेयी को उपदेश 32. ग्रहण की क्षमता 33. बड़ा—छोटा।

इस प्रकार शतपथ संदर्शन ग्रन्थ में 33 लोकशिक्षाप्रद आख्यानों का लेखन किया गया है। शतपथ संदर्शन के प्रथम अध्याय में कौतूहल और आतुरता में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर न देने की बात कही गई है—

''वृद्ध पुरोहित की रहस्यमयी वाणी को सुनकर अब तो वह और भी अचम्भे मे पड़ गया। बैल के पास असुरघ्नी वाणी ? अरे गुरुदेव असुरघ्नी वाणी क्या बला है ? उस नये ऋत्विक् की उत्सुकता और कुतूहल को देखकर उस वृद्ध पुरोहित ने अनुमान लगा लिया कि, उत्सुकता मे दिया गया उपदेश सार्थक और प्रभावी नहीं हो सकता। अतः उसने उस नये ऋत्विक को समझाते हुए कहा। वृद्ध पुरोहित— वत्स ! किसी भी ज्ञान को ग्रहण करने मे उत्सुकता तो आवश्यक है किन्तु आतुरता घातक है। क्योंकि, आतुरता से चातुरता का नाश ही देखा गया है। अब नया ऋत्विक अपने आप को सम्हाल कर आगे कुछ जानने की जिज्ञासा लेकर शान्त बैठा रहा और वृद्ध पुरोहित से ज्ञान की बातें सुनता रहा।''[5]

शरणागत की रक्षा न करने पर भर्त्सना का पात्र किस प्रकार बनना पड़ता है तथा उसका क्या परिणाम होता है ? यह समझाने का प्रयास किया गया है।

''जिस समय अग्नि को पकड़कर देवगण ले जा रहे थे अग्नि ने उस समुद्रीय जल के ऊपर क्रोध करते हुए उसके ऊपर थूक दिया और उसकी भर्त्सना करने लगा। अग्नि ने जल के ऊपर इसलिए थूका कि, तुम शक्ति के रहते हुए भी हमे बचा नहीं सके।''[6]

देवत्व की परिभाषा को चरितार्थ करने वाले आख्यान को उपजीव्य बनाकर आपने लिखा है—

''देवताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे अपने भक्तों को कभी किसी दशा मे निराश नहीं देखना चाहते थे। यही तो उनका देवत्व था। वे सदा प्रकृति के पोषण की बातों को ही सोचते रहते थे। प्रकृति के विनाशकारी विचारों को तो वे अपने पास फटकने भी नहीं दिया करते थे।''[7]

देव वही है जो जीवन तक दे सकें। जो किसी का जीवन लेने में ही आतुर रहें और अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं वे देव नहीं दैत्य है। देवों का कार्य है संसार में शान्ति की स्थापना करना।

''देवगण सदा ही उस युद्ध को बलपूर्वक समाप्त करते हैं और संसार में शान्ति की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।''[8]

लेखक ने समाज के उन पुरातन नियमों को स्वीकार किया है जो वेदाधारित हैं तथा लोकोपकारक हैं। लेखक ने कहा है— ''दलदल और ऊसर होने के कारण बुद्धिजीवी जन उसे अपवित्र अथवा अनुपयोगी मानते थे। क्योंकि, उस समय मनुष्यों के अन्तःकरण में आवश्यकता से अधिक संग्रह करने की दुस्प्रवृत्ति ने जन्म हीं नहीं लिया था। अतः उस समय वहाँ कोई भी ब्राह्मण निवास नहीं करना चाहते थे। किन्तु कुछ दिनों के बाद वाले ब्राह्मणों ने यजमानों से लम्बी दक्षिणा ग्रहण कर उस दलदल वाली और ऊसर भूमि मे यज्ञ करके उसे भी उपजाऊ बना दिया था।''[9]

होता का तात्पर्य नेता भी है। जो अपने स्वार्थों की बलि चढ़ाकर भी समाज की सेवा करता है वही नेता होता है। वैदिक यज्ञों में भी होता का चयन उसी प्रकार किया जाता है कि जो उत्कृष्ट गुणों में बढ़चढकर हो तथा समाज को अग्रसर करने में अपने आप को न्योछावर कर दे। शतपथ संदर्शन में होता का उद्धरण प्रस्तुत करते हुए विषय डा. गौतम ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है—

''होता को जागरणशील, कर्मठ और न्यायप्रिय होना बहुत ही आवश्यक होता है।''[10]

डा. गौतम चाटुकारिता से अत्यधिक परहेज करते हैं। वे गुणों के प्रसंशक हैं किन्तु अवगुणी व्यक्ति की तुच्छ स्वार्थ के लिए चाटुकारिता करना उन्हें सह्य नहीं है वे कहते हैं—

''प्रशंसा यदि सत्य है और वास्तव मे श्रद्धा और भक्ति से कही गयी है तो प्रशंसा है। यदि वह केवल स्वार्थ के वशीभूत होकर मन में कपट और मुख में प्रिय है तो वह प्रशंसा न रहकर चाटुकारिता हो जाती है। देवजन चाटुकारिता और प्रशंसा के भेद को समझते हैं ; अतः जो जिस भाव से पूरित हो स्तुति करता है उसे देवों द्वारा उसी प्रकार फल की प्राप्ति होती है।''[11]

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

डा. गौतम श्रम और तप को पृथक् मानते हुए उनकी अलग–अलग व्याख्या करते हैं। उनके अनुसार श्रम केवल शारीरिक है किन्तु तप के लिए मन के साथ सोद्देश्य शारीरिक श्रम का होना नितान्त आवश्यक है। उसी से मनुष्य को जीवन में सफलता प्राप्त होती है तथा मानवीय जीवन उन्नत होता है–

''जब वे केवल शारीरिक श्रम द्वारा यज्ञ को ढूढ़ रहे थे तो उन्हें वह देवों द्वारा छिपाया हुआ यज्ञ प्राप्त नहीं हुआ। अतः उन्होंने विचार किया कि, केवल श्रम से यज्ञ की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए अब वे श्रम और तप दोनों के द्वारा यज्ञ को ढूढ़ना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें इस बात का ज्ञान हो गया था कि देवों ने जो कुछ भी जीता है वह केवल श्रम और तप से ही जीता है।''[12]

डा. गौतम के अनुसार वही व्यक्ति न्यायप्रिय हो सकता है जो अग्नि के समान पक्षपात रहित होता है तथा वही कोमल हृदय भी होता है–

''अग्नि देवों मे सबसे मृदु हृदय अर्थात् नरम दिलवाला है। अतः जिसको मनुष्य यह समझे कि, यह सबसे नरम दिल वाला है उसी के पास जाय।''[13]

मनुष्य को लालच नहीं करना चाहिए। लालच करने से मनुष्य का नैतिक पतन होता है। उक्त के सन्दर्भ में लेखक डा. गौतम ने कहा है– ''देवों ने सृष्टि के समस्त रूपों को अग्निदेव के हाथ मे उन्हें परम तेजस्वी मानकर कुछ दिनों के लिए धरोहर के रूप मे रख दिया। चाहे वे रूप ग्राम से सम्बन्धित रहे हों अथवा वन से संबन्धित रहे हों। देवों ने विचार किया था कि, अग्नि अच्छा रक्षक है; वह धरोहर की रक्षा भलीभाँति कर लेगा। यह विचार करके ही देवों ने रूपों को अग्नि के हवाले कर दिया था। किन्तु उन रूपों को देखकर अग्नि के मन मे भी लालच समा गया और वह इन रूपों को न लौटाने की भावना से कहीं अति गोपनीय स्थान मे छिपा दिया ओर खुद भी उस स्थान से दूर चले गये, कि कहीं देवता उस स्थान मे आकर रूपों को उनसे माँग न लें। किन्तु देवताओं की वस्तु थी तो देवताओं को कैसे भूल जाती। संसार का नियम भी है कि लेने वाले को नहीं भूलता देने वाले को भले ही भूल जाये अथवा न देने की नीयत से स्मरण न होने का झूँठ बोल जाये।''[14]

कौटुम्बिक एकता किसी भी परिवार व समाज की उन्नति का मूल मन्त्र है। डा. गौतम कहते हैं– ''आपस मे लड़ते और झगड़ते देखकर राक्षसों को अवसर प्राप्त हो गया। क्योंकि, राक्षस ऐसे अवसर की प्रतीक्षा मे घात लगाये बैठे ही रहते हैं कि, कोई भी आपस मे लड़े और उन्हें उनके बीच मे घुसने का अवसर प्राप्त हो जाय।''[15]

मानव जीवन को प्राप्त कर कठोर परिश्रम के द्वारा उत्तम शिक्षा और न्याय से धन कमाने के पक्षपाती हैं डा. गौतम। डा. गौतम दीक्षा अर्थात् विशेष शिक्षा तथा तप अर्थात् सतत् प्रयास को सफलता की कुंजी मानते हुए कहते हैं– ''प्राणियों के पास जो तप होता है उसी से उनमे निखार आता है। अब देवगण दीक्षा और तप के प्रभाव से निखरे हुए थे। उनकी कान्ति चारों ओर फैल रही थी। वे अपने दीक्षा और तप के प्रभाव से दशों दिशाओं को आलोकित कर रहे थे।''[16]

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि आधुनिक समाज के लिए जिस शिक्षा की विशेष आवश्यकता प्रतीत हो रही है वह सब कुछ डा.गौतम के साहित्य में समाविष्ट है। डॉ. गौतम ने अपनी समस्त पुस्तकों में पुरातन भारतीय साहित्य का सार समेटकर एकत्रित कर दिया है जिसका अध्ययन आधुनिक समाज में पुरातन संस्कृति से अनभिज्ञ होते जा रहे विद्यार्थियों के लिए विशेष लाभकारी तथा कौशल विकास में सहायक हैं।

मैं उनके द्वारा लिखित साहित्य को अधिकाधिक पढ़े जाने की संस्तुति करता हूँ एवं उसे उच्चतर माध्यमिक स्तर तथा उच्चशिक्षा के पाठ्यक्रमो में निर्धारित करने की शिफारिश भी करता हूँ।

सन्दर्भ :–

1. शतपथ संदर्शन पृ. 9
2. वैदिक चिन्तन मंजूषा
3. श्रीमद्दरामगीता की तात्कालिकी पृ.
4. वेदचिन्तनम्
5. शतपथ सदर्शन पृ 21–22
6. शतपथ सदर्शन पृ 29
7. शतपथ सदर्शन पृ 34
8. शतपथ सदर्शन पृ 38
9. शतपथ सदर्शन पृ 40
10. शतपथ सदर्शन पृ.44
11. शतपथ सदर्शन पृ 45
12. शतपथ सदर्शन पृ 47
13. शतपथ सदर्शन पृ 50
14. शतपथ सदर्शन पृ 76
15. शतपथ सदर्शन पृ 83
16. शतपथ सदर्शन पृ 90

© RRIJM 2015, All Rights Reserved